

# भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : जून 2009

## प्रश्न पत्र-IV

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

### भाग-I (दशा पद्धति)

1. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखें :-
  - (अ) किसी धटना का समय निर्धारण में विशोत्तरी दशा का प्रयोग आप कैसे करेंगे?
  - (ब) काल निर्णय में प्रत्यन्तर दशा नाथ की भूमिका
  - (स) योगिनी दशा अपने पहले पर्याय (cycle) में दूसरे व तीसरे पर्याय से अच्छा फल देता है - क्या आप इस कथन पर सहमत हैं? व्याख्या करें।
  - (द) फल निर्णय में विविध दशाओं का अध्ययन करना क्या आवश्यक होगा? अगर भिन्न-भिन्न फल-निर्णय हुआ हो तो उसका समाधान कैसे करें?
2. निम्नांकित कुण्डली का अध्ययन करके राहु महादशा में - बुध, केतु और शुक्र की अंतरदशा फलों पर विवेचना करें।

जन्म दिन : 12.6.68 जन्म समय : 20.50 धंटे

जन्म स्थान : दिल्ली, शुक्र की भोग्य महादशा 4व 8मा 3दि

क्र.स.	ग्रह	राशि	अंश	कला
1	लग्न	धनु	20	23
2	सूर्य	वृषभ	28	17
3	चंद्र	धनु	23	33
4	मंगल	मिथुन	00	48
5	बुध (व)	मिथुन	07	10
6	गुरु	सिंह	26	09
7	शुक्र	वृषभ	29	38
8	शनि	मीन	29	38
9	राहु	मीन	22	58
10	केतु	कन्या	22	58

3. निम्नांकित कुण्डली का अध्ययन करें और जातक की नौकरी, विवाह व सन्तान का समय निर्णय करें।

जन्म दिन : 23.12.50, जन्म समय 16.00 धंटे, जन्म स्थान : दिल्ली

मंगल की भोग्य दशा : 5व 1मा 4दि

क्र.स.	ग्रह	राशि	अंश	कला
1	लग्न	वृषभ	17	20
2	सूर्य	धनु	07	51
3	चंद्र	वृषभ	26	58
4	मंगल	मकर	13	08
5	बुध	धनु	25	00
6	गुरु	कुम्भ	09	59
7	शुक्र	धनु	17	26
8	शनि	कन्या	08	50

9	राहू	कुंभ	29	46
10	केतु	सिंह	29	46

4. निम्न धटनाओं का समय निर्णय कैसे करेंगे? समझाएँ  
 (अ) शिशु का जन्म  
 (ब) मकान का मालिक बनना  
 (स) पदोन्नति
5. (अ) प्रश्न 3 में दी गई कुण्डली के लिए योगिनी महा दशा का क्रम लिखें।  
 (ब) योगिनी महादशा के पहले पर्याय (Cycle) के अनुसार जातक के कार्य क्षेत्र के बारे में चर्चा करें।

### भाग-II (गोचर)

6. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखें।  
 (अ) गोचर परिणामों के अध्ययन में चन्द्रमा को क्यों महत्व दिया जाता है?  
 (ब) लता का सिद्धान्त  
 (स) द्विग्रह गोचर सिद्धान्त  
 (द) सप्तशलाका चक्र
7. (अ) साढ़ेसाती क्या है? क्या यह अनुकूल या प्रतिकूल है? व्याख्या करें।  
 (ब) प्रश्न 2 में दी गई कुण्डली जातक का साढ़ेसाती के प्रभाव पर प्रकाश डालें।
8. (अ) किसी धटना की समयावधि निर्धारण में गोचर के नियमों का प्रयोग कैसे करते हैं?  
 (ब) क्या जन्म कुण्डली के बिना गोचर फलादेश कर सकते हैं? उदाहरण सहित समझाएँ।
9. (अ) शनि की पर्याय फल की व्याख्या करें।  
 (ब) मूर्ति निर्णय पर अपना विचार व्यक्त करें।
10. जन्म कुण्डली का मार्गी या वक्र ग्रह का गोचरीय वक्रत्व हो तो उसका फल निर्णय कैसे करेंगे।